Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

हाड़ौती सर्किट में पर्यटन विकास : कोटा जिले का एक अध्ययन

डॉ. अंजना जाटव*

* एम.ए. (भूगोल), नेट, पीएच. डी. बोरखेड़ा, कोटा (राजस्थान) (पूर्व गेस्ट फेकल्टी- वि.सं.यो.) शहीद श्री मुकुट बिहारी मीणा राजकीय महाविद्यालय, खानपुर (झालावाड़) (राज.) भारत

शोध सारांश – हाड़ौती राजस्थान का महत्वपूर्ण भू-भाग है जिसका ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक महत्व है। पर्यटन की दृष्टि से हाड़ौती परिपथ में कोटा, बूंदी, झालावाड एवं बारां जिलों को सम्मिलित किया जाता है।प्रस्तुत शोध पत्र हाड़ौती सर्किट के कोटा जिले केपर्यटन स्थलों एवं देशी विदेशी पर्यटकों की संख्या का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। कोटा जिले में पर्यटन विकास का विश्लेषण करने के लिए इस शोध पत्र में द्वितीयक आंकड़ो का प्रयोग किया है जो पर्यटन एवं अन्य विभागों के प्रतिवेदनों से प्राप्त कियेगये है। कोटा जिला पर्यटन की दृष्टि से राज्य में अन्य जिलों से बहुत पीछे है जिसके कई उत्तारदायी कारण है।हाड़ौती परिपथ में हवाई यातायात की सुविधा उपलब्ध हो जाये तो कोटा जिले में आने वाले देशी विदेशी पर्यटकोंकी संख्या में वृद्धि होने की भरपूर सम्भावनाएं व्याप्त है।

शब्द कुंजी – पर्यटन, हाड़ौती,कोटा,विकास, पर्यटक।

प्रस्तावना – पर्यटन की दृष्टि से हाड़ौती सर्किट का राज्य में कम अन्वेषण हुआ है। यह प्रदेश अपने सुंदर स्थापत्य एवं मूर्तिकला के मन्दिरों, किलों और महलों के लिए जाना जाता है।हाड़ौती सर्किट(परिपथ) में बूंदी, कोटा और झालावाड़ को सम्मिलित किया जाता है इसके अतिरिक्त बारां जिले के पर्यटक स्थल भी इस परिपथ में ही समिलित किये जाते है।हाड़ौती सर्किटहरावतीके मैदान में फैला हुआ है जो बूंदी पहाड़ियों, कोटा पठार से घिरा हुआ है जिसमें सुंदर पहाड़ियाँ, घाटियाँ और झीले अवस्थित है जो मनोरम प्राकृतिक सौन्दर्य का नजारा प्रस्तुत करते है।

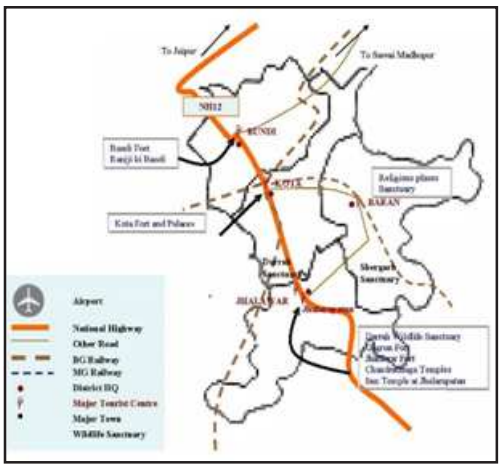

रेखाचित्र: हाड़ौती परिपथ

कोटा राजस्थान में जयपुर और जोधपुर के बाद तीसरा सबसे बड़ा नगर और लोकप्रिय पर्यटक स्थलों में से एक है। चम्बल नदी के किनारे पर स्थित कोटा विविध प्रकार की पेंटिंग्स, महलों, संग्रहालयों, और पूजा स्थलों के लिए प्रसिद्ध है। कोटा स्वर्ण आभूषण, कोटा डोरिया व सिल्क साड़ियों एवं कोटा स्टोन के लिए जाना जाता है।कोटा का इतिहास 12वीं शताब्दी का है जब राव देव ने इस क्षेत्र पर विजय प्राप्त की और हाड़ौती की स्थापना की। कोटा के स्वतंत्र राजपूत राज्य को 1631ईस्वी में बूंदी से अलग किया गया था। कोटा राज्य का एक अशांत इतिहास रहा है। यहाँ पर विभिन्न मुगल शासकों,जयपुर के महाराजाओं और यहाँ तक कि मराठा सरदारों ने भीआक्रमण किये थे। कोटा शहर अपने वास्तुशिल्प वैभव के लिए दुनिया भर में जाना जाता है जिसमें सुंदर महल, मंदिर और संग्रहालय शामिल हैं जो पूर्व युग की भव्यता को प्रदर्शित करते हैं।कोटा राज्य का एक प्रमुख औद्योगिक शहर भी है। पर्यटन की दृष्टि से भी कोटा महत्वपूर्ण हैं।

उद्देश्य एवं शोध प्रविधि – यह शोध पत्र कोटा जिले के पर्यटन से सम्बन्धित है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य कोटा जिले के प्रमुख पर्यटक स्थलों का विश्लेषण एवं पर्यटन विकास का मूल्यांकनकरना है। निर्धारित शोध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस शोध पत्र में द्वितीयक स्त्रोतों से प्राप्तआंकड़ों का प्रयोग किया गया है। कोटा जिले केपर्यटन से सम्बन्धित सूचनाओं का संकलन वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC)पर्यटन विभाग, राजस्थान सरकार से प्राप्त किये गये। इसके अतिरिक्त जिला सांख्यिकीय रुपरेखा, डिस्ट्रिक्ट गजेटियर आदि से जिले से सम्बन्धित अन्य सूचनाओं का संकलन किया गया।इस हेतु विभिन्न राजकीय विभागोंकी ऑफिसियल वैबसाइट सेसमंकों का संकलन किया गया हैं।संकलित सूचनाओं को आवश्यक सांख्यिकीय विधियों द्वारा विश्लेषित कर आरेख एवं तालिका द्वारा दर्शाया गया है।

कोटा जिले के प्रमुख पर्यटन स्थल – कोटा जिले में धार्मिक, ऐतिहासिक, पर्यावरण, कला एवं संस्कृति से सम्बन्धअनेक प्रकार केपर्यटन स्थल हैं जो जिले का पर्यटन क्षेत्रमें महत्व बढ़ाते है।यहाँ के मेले एवं पर्व भी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते है। जिले के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों का विवरण अग्रानुसार है-

गढ़ पैलेस : कोटा में सबसे प्रमुख पर्यटक आकर्षण गढ़ है। यह विशाल परिसर,जिसे सिटी पैलेस के नाम से भी जाना जाता है जो मुख्य रूप से

राजपूत वास्तुकला शैली से निर्मित है। यहमहल विशाल परिसर में फैला है इसका निर्माण इतिहास के विभिन्न समयावधियों में राजपूत वंश के विभिन्न शासकों द्वारा किया गया।

महाराव माधो सिंह संग्रहालय : यह गढ़ पैलेस की चार दीवारी में स्थित है। यह एक शानदार संग्रहालय है जिसमें कोटा के राजपुत लघु चित्रों व पेन्टिंगस् का संग्रह है।इसके अलावा इसमें आकर्षक मूर्तियाँ, हथियार एवं अन्य बहुमूल्य प्राचीन वस्तुएँ उपलब्ध है।

बृज विलास राजकीय संग्रहालय: छत्र विला उद्यान में स्थित यह एक बेहतरीन राजपूत इमारत है और इसमें सरकारी संग्रहालय भी है। इसका निर्माण 18वीं शताब्दी में महाराव दुर्जन शाल द्वारा करवाया गया संग्रहालय में पूर्व ऐतिहासिक एवं ऐतिहासिक कलाकृतियाँ एवं मूर्तियोंका विशाल भंडार हैं। यहाँ दर्शायी ये मूर्तियां 5वीं से 15वीं शताब्दी के मध्य की है। यहाँ पुराने सिक्के, चित्र,शिलालेख आदि इस संग्रहालय के महत्वपूर्ण आकर्षण हैं।

अभेड़ा महल और अभेड़ा जैव उद्यान : कोटा से 8 किलोमीटर दूर एक तालाब के किनारे पर स्थित है। यह मध्यकालीन महल यहाँ के प्राचीनशासकों का मनोरंजन स्थल था जहाँ से वे क्षेत्र के वन्य जीवन और प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेने आते थे। अभेड़ा महल के नजदीक ही करणी माता का मंदिर है जोकोटा राजवंश की कुल देवी है। अभेड़ा जैविक उद्यान अभेड़ा महल कोटा के पास नांता रोड पर स्थित है। इसका निर्माण वन विभाग द्वरा किया गया है। यह जैविक उद्यान नया है जोवन्य जीवों के लिए पर्यावर्णीय अनुकूल स्थल है।

जगमंदिर पैलेस : इसमहल का निर्माण 1743-1745 ईस्वीके मध्य कोटा की एक रानी द्वारा किया गया था।लाल बलुआ पत्थर से निर्मित यह महलकिशोर सागर झील के बीच में स्थित है। यह महलसुंदरता का एक उत्कृष्ट स्मारक है। जगमंदिर महल के पास स्थित केशर बाग अपने शाही स्मारकों के लिए प्रसिद्ध है।

कोटा बैराज : चम्बल नदी पर बना कोटा बैराज राजस्थान राज्य के सबसे महत्वपूर्ण जलाशयों में से एक है। कोटा बैराज 27,332 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ हैजो इसे हैती जितना बड़ा बनाता है। बांध से अधिक दबाव व शक्ति के साथ दरवाजों से निकलता हुआ पानी का दृश्य हर किसी को मंत्रमुग्ध कर देने वाला होता हैं जो हर किसी कोआकर्षित करता है। इस बैराज के पास ही भगवान शिव का कंसुआ मंदिरजिसमें एक दुर्लभ चार मुख वाला शिव लिंग हैबैराज के पास एक दर्शनीय स्थल है।

सेवन वंडर पार्क: कोटा शहर में किशोर सागर के पास इसका निर्माण किया गया है जिसमें विश्व के सात अजूबों की एक ही भ्रमण में प्रतिकृति देखने को मिलती है। यहाँ पर ताज महल, मिश्र के पिरामिड, हैंगिग गार्डन, एफिल टावर एवं स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी जैसे सात अजूबों को हुबहू बनाया गया है।

रिवर फ्रंट : इसका निर्माण चम्बल नदी पर कोटा बैराज और नयापुरा पुलिया के मध्य किया गया है। यह राजस्थान की शाही स्थापत्य कला की झलक उपलब्ध कराता है। चम्बल नदी के दोनों ओर कुल 6 किमी की लम्बाई में बनाया गया चम्बल रिवर फ्रंट विश्व का पहला हेरिटेज रिवर फ्रंट है। इस पर अनेक घाट, महल, फाउटेन, वाटर पार्क, मूर्ति, मंदिर आदि की झलक देखने को मिलती है।हेरिटेज जोन में लाल किला, जामा मस्जिद एवं हवा महल जैसी हेरिटेज इमारते देखी जा सकती है।

चम्बल गार्डन: कोटा शहर के सबसे खूबसूरत पिकनिक स्थलों में से एक यह चंबल नदी के तट पर स्थित है। हरियाली की गोद में पर्यटक यहाँ प्रकृतिकी शान्ति काआनन्द ले सकते हैअद्भुत नाव की सवारीयहाँका मुख्य आकर्षण है जो वन कार्यालय घाट के पास सेप्राप्त हो सकती है। यह नदी स्वयं राष्ट्रीय चंबल घड़ियाल (गेवियल) अभयारण्य का एक भाग है। दलदली मगरमच्छों और घड़ियालों की तेजी से घटती आबादी को संरक्षित करने के लिए इस अभ्यारण्य की स्थापना वर्ष 1983 मेंकी गई थी। यहाँ पर अनेक प्रकार के पक्षी अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है।

गरडिया महादेव : महादेव कायह मन्दिर राष्ट्रीय राजमार्ग 76 पर उदयपुर रोड कोटा से 24 किमी की दुरी पर स्थित मोड से 5 किमी जंगल के अंदर दुर्गम वन क्षेत्र में यह प्राकृतिक सौन्दर्य का स्थल है। यह एक प्राचीन शिव मन्दिर है,यहाँ से चम्बल के खुबसूरत नजारे को देखा जा सकता है।पर्यटक यहाँ पर प्राकृतिक शांति एवं सौन्दर्य को महसूस करते है।वर्तमान में यह स्थान मुकन्दरा हिल्स अभयारण्य का भाग होने के कारण वन विभाग की अनुमति एवं निर्धारित शुल्क के भुगतान से ही पर्यटक और वाहन प्रवेश कर सकते है।

हैंगिग ब्रिज : चम्बल नदी पर बना यह हैगिग ब्रिज अपनी खूबसूरती के लिए जाना जाता है।शहर की बाहरी सीमा से गुजर रहे राष्ट्रीय राजमार्ग 27 पर इस ब्रिज का निर्माण वर्ष 2017 में पूर्ण हुआ। चम्बल नदी पर बना यह हैंगिंग ब्रिज 1400 मीटर लम्बा है और इसका झूलता हुआ हिस्सा 350 मीटर है। यह हैंगिग ब्रिज 30 मीटर की चौड़ाई में 6 लेन का है।

मुकुंदरा हिल्स बाघ अभयारण्य (राष्ट्रीय उद्यान) : इतिहास की दृष्टि से यह क्षेत्र कोटा महाराजाओं का शिकार स्थल होता था। यह कोटा से लगभग 50 दुरी पर रावतभाटा मार्ग पर चम्बल के पूर्वी किनारे पे स्थित है। यह अभ्यारण्य सघन वन क्षेत्र है। यहाँ पैंथर,भालू,हिरण,जंगली सूअर, लोमड़ी, सियार तथा काफी संख्या में स्थानीय एंव प्रवासी पक्षियों को देखा जा सकता है। अभ्यारण्य मे प्राकृतिक वातावरण में जंगली जीव जंतुओ को स्वछंद विचरण करते हुये देखा जा सकता है।मुकुंदरा हिल्स कोवर्ष 1955 में वन्य जीव अभ्यारण और 2004 में राष्ट्रीय पार्क का दर्जा दिया गया। इसे वन्यजीव अधिनियम 1972 के अंतर्गत वर्ष 2013 में इसे टाइगर रिजर्व अधिसूचित किया है। यहकोटा और चित्तौडगढ़ जिलों में 200.54 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है।

कोटा दशहरा मेला : कोटा शहर में प्रतिवर्ष अक्टूबर नवम्बर माह में नवरात्रों के बाद दशहरा के अवसर पर यहाँ के दशहरा मेला ग्राउंड में भारत का प्रसिद्ध 15 दिवसीय दशहरा मेले का शुभारम्भ होता है। इस मेले की हलचल नवरात्र स्थापना के साथ ही शुरू हो जाती है। इस मेले में हर रोज नौ दिन तक आकर्षक व मनोहारी प्रस्तुतियों की रामलीला का मंचन किया जाता हैजिसमें में राम बारातशाही परम्परानुगत निकाली जाती है। इसके उपरांत दशहरा के दिन सौफीट से अधिक ऊंचाई के रावण,कुम्भकरण,मेघनाद के पुतलों का आकर्षक आतिशबाजी के साथ शाही परम्परा अनुसार दहन किया जाता है। इस आकर्षण को देखने के लिये स्थानीय शहरवासियों के अतिरिक्त विदेशी पर्यटकतथा सूदूर क्षेत्रों से लोग भीकोटा आते हैं। बुराई पर अच्छाई की जीत के पर्व मे सभी पारस्परिक रूप से इस दिन हर्ष उल्लास का जश्न मनाते हैं। कोटा के दशहरा मेले का अलग ही महत्व व आकर्षण है।इसके अलावा कोटा शहर एवं जिले में अनेक ऐतिहासिक महत्व के मन्दिर, भवन, स्थापत्य कला के स्थल, जैविक एवं प्राकृतिक सौन्दर्य के स्थल उपलब्ध है जो पर्यटको को आकर्षित करते है।

पर्यटन विकास निगम: राज्य में पर्यटन विभाग वर्ष 1956 से एक स्वतंत्र विभाग के रूप में कार्य कर रहा है।पर्यटन विभाग के अधीनराज्य पर्यटन विकास निगम की स्थापना वर्ष 1979 में की गयी है जो राज्य में पर्यटन को

बढ़ावा देने के लिए कार्य करता है। इसका मुख्यालय जयपुर में है। यह निगम राज्य में पर्यटन विकास के लिए अनेक प्रकार की योजनाओं के संचालन के साथ-साथ होटलों का भी संचालन करता है। यहदेशी विदेशी पर्यटकों को सुविधाएँ व सूचना मुहैया कराता है। कोटा जिले मेंपर्यटन विभाग का क्षेत्रीय पर्यटन कार्यालय, पर्यटक स्वागत केन्द्र एवंपर्यटक सूचना केंद्र संचालित है,इसके अतिरिक्त जिले में राजस्थान पर्यटन विकास निगम का15 कमरों का एक होटल 'चम्बल' भी संचालित है।

कोटा जिले में पर्यटन विकास: राज्य का तीसरा बड़ा शहर व महत्वपूर्ण औद्योगिक केंद्र होने के बावजूद कोटा जिला पर्यटन की दृष्टि से काफी पीछे है। यहाँ पर विभिन्न प्रकार के पर्यटक स्थल होने के बावजूद पर्यटन का इतना विकास नहीं हुआ है जितना दुसरे पर्यटक केन्द्रों का हुआ है। पर्यटन सम्बन्धी आँकड़ों पर नजर डाले तो वर्ष 2023 में राज्य में कुल 17.90 करोड़देशी एवं 16.99 लाख विदेशी पर्यटक भ्रमण पर आये जिनमें से जिले में 9,42,403 देशी व मात्र 743 विदेशी पर्यटक ही कोटा जिले में आये जो कि राज्य के कुल पर्यटकों की संख्या का मात्र 0.52 प्रतिशत ही है। इसी प्रकार पर्यटकों की संख्या की दृष्टि से कोटा जिला सीकर, जयपुर, अजमेर, उदयपुर, बीकानेर आदि महत्वपूर्ण स्थलों से काफी पिछड़ा हुआ है।इस प्रकार देशी पर्यटकों की संख्या में कोटा जिले का राजस्थान में 25 वां स्थान है जबकि विदेशी पर्यटकों संख्याकोरोना वैश्विक महामारी के बाद हजार काआंकड़ा भी पूरा नहीं कर पाया है। वर्ष 2023 में विदेशी पर्यटकों की संख्या मात्र 743 थी जो बहुत ही कम है। तालिका में विगत 18 वर्षों में कोटा जिले में आने वाले देशी-विदेशी व कुल पर्यटकों की संख्या को दर्शाया गया है।

तालिका: 1 कोटा जिले में देशी विदेशी पर्यटकों का आगमन2006-2023

क्र.	वर्ष	पर्यटकों की संख्या		
		देशी	विदेशी	कुल
1	2006	98319	3994	102313
2	2007	104059	4440	108499
3	2008	100227	4550	104777
4	2009	107358	2732	110090
5	2010	97971	3450	101421
6	2011	69640	2441	72081
7	2012	62029	1881	63910
8	2013	63015	2889	65904
9	2014	51467	3516	54983
10	2015	90598	2571	93169
11	2016	89546	1778	91324
12	2017	202298	1860	204158
13	2018	117596	1889	119485
14	2019	128119	2867	130986
15	2020	102955	721	103676
16	2021	189953	154	190107
17	2022	804971	659	805630
18	2023	942403	743	943146
संयुक्त वार्षिक वृद्धि दर(CAGR)		14.22%	-9.42%	13.96%

स्रोत: वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन, पर्यटन विभाग, राजस्थान सरकार

आरेख: 1

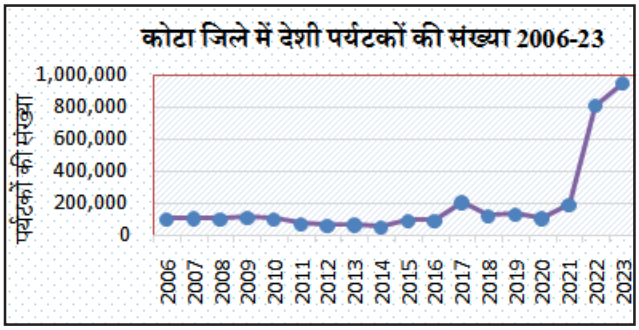

तालिका में दर्शाए गये आंकड़ों के अवलोकन से स्पष्ट है कि वर्ष 2006 में जिले में कुल1,02,313 पर्यटकभ्रमण पर आये जिनमें से 98,319देशी एवं 3,994 विदेशी पर्यटक थे। तालिका एवं आरेख के आंकड़ों के अवलोकन से स्पष्ट है की कोटा जिले में देशी पर्यटकों की संख्या में वर्ष 2009 से 2014 तक सामान्य उतर चढ़ाव के साथ उतरोतर कमी दर्ज की गयी है। वर्ष 2017 में विगत वर्ष की तुलना में देशी पर्यटकों की संख्या दो गुणा से अधिक बढ़कर 2 लाख के आंकड़े को भी पार कर गयी, इसके पश्चात पुन: कमी दर्ज हुई जो कोरोना वैश्विक महामारी काल के दौरान वर्ष 2021 में 1.89 लाख तक पहुँच पायी। कोरोना महामारी के पश्चात कोटा जिले में देशी पर्यटकों की सख्या में बड़ी वृद्धि दर्ज की गयी जो विगत वर्ष की तुलना में चार गुना से भी अधिक थी। वर्ष 2022 व 2023 में देशी पर्यटकों की संख्या क्रमश: 8.04 लाख व9.42 लाख तक पहुँच गयी। देशी पर्यटकों की संख्या में उतार-चढ़ाव की भांति विदेशी पर्यटकों की संख्या में भी देखने को मिला परन्तु विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि ऋणात्मक ही दर्ज हुई है। उक्त अवधि में विदेशी पर्यटकों की सर्वाधिक संख्या वर्ष 2008 में दर्ज हुई जो मात्र 4450 थी और यह आंकड़ा आज तक प्राप्त नहीं हो सका है। कोरोना महामारी के पश्चात वर्ष 2022 व 2023 में कोटा में विदेशी पर्यटकों की संख्या क्रमश: 659 एवं 743 दर्ज की गयी जो नगण्य है।

इसी प्रकार जिले में 2006 से 2023 की अवधि में देशी विदेशी पर्यटकों की संख्या की संयुक्त वार्षिक वृद्धि दर को देखा जाये तो देशी पर्यटकों की संख्या की संयुक्त वार्षिक वृद्धि दर 14.22 प्रतिशतजबकि विदेशी पर्यटकों की संयुक वार्षिक वृद्धि दर ऋणात्मक दर्ज हुई जो कि -9.42प्रतिशत है। जिले में पर्यटकों की कुल संख्या में इस अवधि के दौरान संयुक्त वार्षिक वृद्धि दर13.96 प्रतिशत दर्ज की गयी।इससे स्पष्ट प्रतीतहोता है किअध्ययन क्षेत्र कोटा विदेशी पर्यटकों को आकर्षित नहीं कर पा रहा है परन्तु यहाँ पर पर्यटन विकास की अपार सम्भावनाएं मौजूद है।

समस्या व समाधान: कोटा जिला राज्य में पर्यटन के क्षेत्र में काफी पिछड़ा हुआ है यहाँ पर पर्यटकों को आकर्षित करने वाले अनेक ऐसे स्थल है जो पर्यटन विकास में भागीदार हो सकते है परन्तु जिले में पर्यटन का प्रयाप्त विकास नहीं पाया है जिसके कारण देशी विदेशी की पर्यटकों की संख्या अन्य केन्द्रों की तुलनासे बहुत पीछे है। कोटा जिले के पर्यटन के पिछड़ेपन होने के कई उतरदायी कारण है जैसे- देशी विदेशी पर्यटकों को लिए हवाई यातायात सेवा का अभाव, पर्यटन स्थलों के व्यापक प्रचार प्रसार का अभाव,पर्यटकों की सुविधा व्यवस्थाओं की कमी, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन केन्दों की पहचान का अभाव आदि। इसलिए जिले में पर्यटन के विकास के

लिए इन सभी समस्याओं को दूर करने के लिए प्रयास करने की महत्ती आवश्यकता है जिससे देशी विदेशी पर्यटकों की संख्या में इजाफा हो सके और रोजगार के साथ-साथ आर्थिक विकास को भी बढ़ेगा। इसके लिए कोटा मुख्यालय को हवाई सेवा से जोड़ने की नितांत आवश्यकता है क्योंकि निकटतम हवाई अव जयपुर है जो लगभग 200 किमी से भी अधिक दूरी पर है।

निष्कर्ष –पर्यटन राज्य की एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है। राज्य के हाड़ौती पर्यटन परिपथ में कोटा बूंदी झालावाड़ एवं बारां जिलों को सम्मिलित किया जाता है। कोटा जिले में अनके पर्यटन महत्व के केंद्र है परन्तु कोटाजिलाराज्य के पर्यटन में काफी पिछड़ा हुआ है।विदेशीपर्यटकों की नगण्य संख्या होना इसके अंतराष्ट्रीय स्तर पहचान के अभाव को बताता है। कोरोना वैश्विक महामारी के पश्चात जिले में देशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि तो हुई है परन्तु विदेशी पर्यटको को जिला आज भी तरस रहा है। पर्यटन विकास के लिए हवाई यात्रा सुविधा के साथ-साथ अन्य सुविधाओ में वृद्धि की आवश्यकता है।पर्यटन विकास के लिए सही दिशा में कदम उठाये जाये तो यहाँ पर पर्यटन का भविष्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. के. एल. बाटरा (1989) प्रोब्लम्स एण्ड प्रोस्प्रेक्ट्स ऑफ ट्यूरिस्म, प्रिण्टवेल पब्लिशर्स, जयपुर।
2. ए. के. भाटिया (1992) ट्यूरिस्म इन इण्डिया : हिस्ट्री एण्ड डवलपमेन्ट्स, स्टरलिंग पब्लिशर्स, न्यूदिल्ली।
3. स्टेटिसटिकल अब्सट्रैक्ट (2008) आर्थिक एवं सांख्यिकी, निदेशालय, जयपुर राजस्थान।
4. वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन (विभिन्न अंक) पर्यटन विभाग, राजस्थान।
5. प्रगति प्रतिवेदन (विभिन्न अंक) पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार।
6. अतुल्य भारत (2016) पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार।
7. सक्सेना, हरिमोहन (2022) राजस्थान का भूगोल, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
8. Sinha Supriya and Varshney Madhur (2017). "Cultural Tourism in Rajasthan : A Strategic Planning Approach for Mandawa" International Journal on Emerging Technologies, ICTOAD. Published by Research Trend.
9. https://www.tourism.rajasthan.gov.in/
10. https://tourism.gov.in/
11. https://tourism.gov.in/sites/default/files/*2020-04/* rajasthan.pdf
12. https://housing.com/news/hi/places-to-visit-in-kota-hi/
13. https://statistics.rajasthan.gov.in/home/dptHome
14. https://www.drishtiias.com/daily-news-analysis/mukundara-hills-tiger-reserve/print_manually

****